موضوع الخطبة : من حقوق المصطفى–الصلاة عليه

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : عبد الكريم المدني

विषय

रसूलुल्लाह ﷺ के हुक़ूक़ में से आप पर दरूदो सलाम भेजना भी है।

पहला खुतबा :

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है,हम उसी की प्रशंसा करते हैं,उसी से सहायता मांगते हैं और उसी से क्षमा मांगते हैं,और हम अपने नफ्सों और अपने अमलों की बुराइयों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं,जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता,और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं,वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं,और मैं गवाही देता हूं की मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उस के संदेष्टा हैं।

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद :

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

●ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला से डरो और उस से खौफ खाओ,उस की पैरवी करो और उस की नाफर्मानी से बचो और याद रखो कि मुहम्मद ﷺ के हुकूक में से आप पर सलातो सलाम भेजना है और आप के लिये वसीला,फज़ीलत और मक़ामे महमूद की प्राप्ति की दुआ करना है जिस का अल्लाह ने आप से वादा किया है।

● और नबी ﷺ पर सलात का अर्थ है आप के लिये दया और उत्तम स्थान की प्रार्थना करना,क्योंकि शब्दकोश में सलात का अर्थ है दुआ करना,जैसा कि अल्लाह तआला के इस कथन में आया है :

(خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ)

तर्जुमा : आप उन के मालों में से सदक़ा ले लीजिये जिस के ज़रिये से आप उन को पाक साफ कर दें और उन के लिये दुआ की जिये,निःसंदेह आप की दुआ उन्हें शांति देगा।

अर्थात उन के लिये दुआ करो क्योंकि तुम्हारी दुआ उन के लिये उन के लिये सूकून और शांति लायेगा।

और फरिश्तों का नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ है दया और रहमत की दुआ करना और आप की प्रशंसा करना।

और अल्लाह तआला का नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ है दया करना और फरिश्तों के बीच आप की प्रशंसा करना।

खुलासा यह है कि नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ आप का सम्मान और आदर करना,आप से प्रेम करना और आप की प्रशंसा करना और लोगों और फरिश्तों के सलात का अर्थ है अल्लाह ताला से इस बात को तलब करना कि आप की प्रशंसा की जाये,आप का ज़िक्र बुलंद हो और आप का सम्मान और आदर अधिकतर हो।

● हे मोमिनो! नबी ﷺ पर सलाम भेजने का अर्थ आप के लिये रक्षा तलब करना है और आप की इज़्जत की रक्षा करना और आप पर कोई कीचड़ न उछाल सके और न आप पर काई आंच आये इस में दाखिल है।

इस प्रकार नबी ﷺ पर सलातो सलाम भेजने से हर प्रकार की भलाइयां जमा हो जाती हैं,इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह सूरे अहज़ाब की इस आयत :

(يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! नबी पर सलातो सलाम भेजते रहो।

की तफ्सीर में कहते हैं : कि इस आयत का उद्देश्य फरिश्तों के बीच अपने बंदे और नबी ﷺ के स्थान को स्पष्ट करना है इस प्रकार कि अल्लाह ताला फरिश्तों के बीच नबी ﷺ की प्रशंसा करता है और फरिश्ते आप पर सलात भेजते हैं,फिर अल्लाह तआला ने नीचे रहने वाली सृष्टि को नबी ﷺ पर

सलातो सलाम भेजने का आदेश दिया ताकि ऊपर और नीचे रहने वाली हर एक मखलूक की प्रशंसा आप के लिये जमा हो जाये। [1]

● हे अल्लाह के बंदो! जब बंदा नबी ﷺ पर सलात भेजने का इरादा करे तो सलात और सलाम दोनों भेजे,इन में से किसी एक को केवल न भेजे,अर्थात इस प्रकार केवल यह न कहे : (सल्लाल्लाहु अलैहे) और न केवल यह कहे : (अलैहिस्सलाम)।

और यह बात इस आयते करीमा :

(يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! नबी पर सलातो सलाम भेजते रहो। [2]

से ली गई है,जैसा की इमाम नववी और इमाम इब्ने कसीर ने फर्माया है।

● ऐ मुसलमानो! जब नबी ﷺ का ज़िक्र आये तो आप पर सलात भेजना अनिवार्य है जैसा कि दो हदीसों में यह बात बतौरे धमकी आई है,पहली हदीस नबी ﷺ ने फर्माया : वह व्यक्ति बखील है जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर सलात ने भेजे। [3]

और दूसरी हदीस में आप ने फर्माया :

(رَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ)

उस व्यक्ति की नाक मिट्टी में रगड़ जाये[4] जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर सलात ने भेजे। [5]

● ऐ अल्लाह के बंदो! नबी ﷺ पर हर हाल में सलात भेजना मुस्तहब है,परन्तु दस खास जगहों में सलात का ज़िक्र है और वह निम्न लिखित प्रकार हैं :

पहली जगह : नमाज़ के अंतिम तशह्हुउद में।

दूसरी जगह : नमाज़े जनाज़ा में दूसरी तक्बीर के बाद।

([1]) तफ्सीर सूरतुल अहज़ाब : 56

([2]) देखें : किताब "अल अज़्कार " बाब सिफतुस्सलाति अला रसूलिल्लाह ﷺ व तफ्सीर अल कुर्आन अल अज़ीम सूरतुल अहज़ाब : 56

([3]) इसे इब्ने हिब्बान ने (3/189) में और नसाई ने अल कुबरा (9800) किताब अमलुल योम वल्लैला बाब मनिल बखील में और तिर्मिज़ी ने(3546) और अहमद ने (1/201) में हुसेन बिन अली बिन अबी तालिब से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है,और शैख शुऐब अर्नऊत ने कहा है कि इस की सनद मज़बूत है।

([4]) अर्रुगाम का अर्थ है : मिट्टी अर्थात बद दुआ करना है कि उस की नाक मि मिट्टी में रगड़ जाये।

([5])इसे तिर्मिज़ी ने (3545) में और अहमद ने (2/254) में अबू हुरेरा ؓ से रिवायत किया है और मुस्नद की तहक़ीक़ करने वालों ने इसे सही कहा है और अलबानी ने इस हसन सही कहा है।

तीसरी जगह : खुतबों में जैसे जुमा,ईदैन और नमज़े इस्तिस्क़ा आदि खुतबों में,इब्ने क़य्यिम कहते हैं : सहाबा के यहां खुतबों में नबी ﷺ पर सलात भेजना जानी पहचानी सी बात थी। [6]

चौथी जगह : जुमा के दिन,औस बिन अबी औस ؓ कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तुम्हारे दिनों में सर्वोत्तम जुमा का दिन है,इसी दिन आदम عليه السلام पैदा किये गये और इसी दिन आप की मृति हुई,इसी दिन सूर फूंका जायेगा और लोग बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे,तो तुम मुझ पर अधिकतर दरूद भेजो क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है। [7]

पांचवीं जगह : मोअज़्ज़िन की अज़ान का जवाब देने के बाद,इमाम मुस्लिम अपनी सही में अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस ؓ से रिवायत करते हैं उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुये सुना : जब तुम मोअज़्ज़िन को अज़ान देते हुये सुनो तो जो मोअज़्ज़िन कह रहा है तुम भी कहो फिर तुम मुझ पर दरूद भेजो क्योंकि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल करेगा। [8]

छटी जगह : दुआ करते समय,और इस की दलील फुज़ाला बिन उबैद ؓ की हदीस है,कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ हमारे बीच [9] बैठे हुये थे कि अचानक एक व्यक्ति आकर दुआ करने लगा,[10] उस ने कहा : ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर,तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ दुआ करने वाले तू ने जल्द बाज़ी की जब तू दुआ करने के लिये बैठे तो अल्लाह की शान अनुसार उस की प्रशंसा कर और मुझ पर दरूद भेज फिर तू अल्लाह से दुआ कर,फिर एक और व्यक्ति उस के बाद आया,उस ने अल्लाह की प्रशंसा की और नबी ﷺ पर दरूद भेजा तो आप ने फर्माया : ऐ दुआ करने वाले दुआ कर तेरी दुआ क़बूल की जायेगी।[11]

([6]) "जिलाउल अफहाम" अल मौतिनुल खामिस मिन मवातिनिस्सलाति अलन्नबी ﷺ पेज : 441

([7]) इसे नसाई ने (1373) में और अबू दावूद ने (1047) में और इब्ने माजा ने (1085)में और अहमद ने (4/8) में रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही अबू दावूद में इसे सही कहा है।

([8]) नम्बर (384)

([9]) बैन अर्थात बैनमा

([10])सल्ला अर्थात दआ(दुआ किया)

([11]) इसे अबू दावूद ने (1481) में और तिर्मिज़ी ने (3477) में शब्द इन्हीं के हैं, और नसाई ने (1284) में नक़्ल किया है और तिर्मिज़ी ने इसे हसन सही कहा है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है।

और उमर ﷺ ने से रिवायत है कहते हैं : नि:संदेह दुआ आकाश और धर्ती के बीच टंगी रहती है वह ऊपर नहीं जाती जब तक तुम अपने नबी ﷺ पर दरूद न भेजो।(12)

सातवीं और आठवीं जगह : मस्जिद में प्रवेश करते और उस से निकलते समय,नबी ﷺ से प्रमाणित है कि जब आदमी मस्जिद में प्रवेश करे तो नबी ﷺ पर दरूदो सलाम भेजे फिर यह दुआ पढ़े :

(اللهم افتح لي أبواب رحمتك)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू मुझ पर अपनी दया के द्वार खोल दे। (13)

और जब मस्जिद से निकले तो तो नबी ﷺ पर दरूदो सलाम भेजे फिर यह दुआ पढ़े :

(اللهم افتح أبواب فضلك)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू मुझ पर अपने फज़्ल (14) के द्वार खोल दे।

नौवीं जगह : सफा और मरवा के बीच सई करना,वह्ब बिन अज्दा से रिवायत है कहते हैं मैं ने उमर ﷺ को मक्का में खुतबा देते हुये सुना,उन्हों ने कहा : जब तुम में से कोई व्यक्ति हज के इरादे से आये तो वह काबे का सात बार तवाफ करे और मक़ामे इब्राहीम के निकट दो रकात नमाज़ पढ़े फिर सफा पर जाये और काबे की ओर मुंह करके सात बार अल्लाहु अकबर कहे,हर दो तक्बीरों के बीच अल्लाह की प्रशंसा और उस की तारीफ करे और नबी ﷺ पर दरूद भेजे और अपने लिये अल्लाह से दुआ करे और इसी प्रकार मरवा पर भी करे।

दस्वीं जगह : जब क़ौम के साथ किसी मज्लिस में हो तो उन से अलग होने से पहले, अबू हूरेरा ﷺ से रिवायत है,कहते हैं रसूल ﷺ ने फर्माया : जब कोई क़ौम किसी मज्लिस में जमा हो और वे न तो अल्लाह का ज़िक्र करें और न उस के नबी ﷺ पर दरूद भेजें मगर क़यामत के दिन उन का

---

(12)इसे तिर्मिज़ी ने (486) में नक़ल किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है।

(13) देखें : सुनन इब्ने माजा (771) और तिर्मिज़ी (314) और इब्ने अबी शैबा (3412) और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है।

(14) इसे बैहक़ी ने (5/94) (9343) में और इब्ने अबी शैबा ने (14501) में संक्षिप्त में रिवायत किया है और साहिबे जामे अलआसार अस्सहीहा अन अमीरिल मोमिनीन उमर बिन अल खत्ताब ﷺ पेज : 159 ने इसे हसन कहा है।

नुक़सान [15] होगा,अगर अल्लाह चाहेगा तो उन्हें क्षमा कर देगा और अगर चाहेगा तो उन की पकड़ करेगा। [16]

यह दस जगहें खास हैं जहां जहां नबी ﷺ पर दरूद पढ़ना मुस्तहब है इस बात को ध्यान में रखते हुये कि हर हाल में दरूद पढ़ना मुस्तहब है।

अल्लाह तआला मुझे और आप सब को महान क़ुर्आन में बर्कत दे,और मुझे और आप सब को क़ुर्आन में पाई जाने वाली आयतों और हिकमत वाले ज़िक्र से लाभ पहुंचाये,मैं अपनी यह बात कहते हुये अपने लिये और आप सब के लिये हर पाप से अल्लाह तआला से क्षमा मांगता हूं तुम भी उसी से क्षमा मांगों निःसंदेह वह अधिक तौबा क़बूल करने वाला और अधिक क्षमा करने वाला है।

दूसरा खुतबा

संपूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिये है और वह अपने बंदों के लिये काफी है,और उस के उन बंदों पर दरूदो सलाम हो जिन को उस ने चुना,प्रशंसा और सलातो सलाम के बाद : ऐ मुसलमानो! आप लोगों पर यह बात ढकी छुपी नहीं है कि दुनिया करोना वायरस के दूसरे लहर से जूंझ रही है,और यह लहर पहले से बड़ी है और कुछ मुल्कों के हेल्थ संेटरों ने यह महसूस किया कि संक्रमित बढ़ रहे हैं और उन्हों ने चेतावनी दी है कि इस का महत्वपूर्ण कारण एहतियाती उपायों का लागू न करना है।

([15]) अर्थात : नक़्स (नुकसान) देखें : अन्निहाया ।

([16]) इसे अहमद ने (2/484) और तिर्मिज़ी ने (3380) में रिवायत किया है और मुस्नद की तहक़ीक करने वालों ने इसे सही कहा है और अल्लामा अलबानी ने इसे सिलसिला अस्सहीहा (1/156) में सही कहा है।

अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर यह अनिवार्य किया है कि वे पांच ज़रूरी चीज़ों की हिफाज़त करें अर्थात दीन,बुद्धि,इज़्जत,जान और माल की,इस लिये स्वास्थ्य की हिफाज़त अनिवार्य है,इसी प्रकार जाने पहचाने एहतियाती उपायों का पालन करना अर्थात मास्क पहनना हाथों को सेनिटायज़र करना,मस्जिद में मुसल्ला लेकर आना और गलत सलत खबरों के फैलाने से बचना जिस के कारण बीमारी में पड़ने का खतरा बढ़ जाये।

फिर आप जान लें—अल्लाह आप पर दया करे—बला और वबा में पड़ने के कारणों में से गुनाह और पाप हैं,अल्लाह तआला का कथन है :

(ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ)

तर्जुमा : खुशकी और तरी में लोगों के बुरे अमलों के कारण फसाद फैल गया,इस लिये कि उन्हें उन के कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखादे,शायद वे बाज़ आ जायें।

और इस का इलाज संपूर्ण पापों से सच्ची तोबा,अधिकतर अल्लाह के समीप गिड़गिड़ाना और दूख दूर करने की प्रार्थना करना है और भोर और सायं में अज़्कार पढ़ना और नमाज़ की पाबंदी करना और अधिकतर नफ्ली इबादत करना,सदक़ा और खैरात करना,लोगों के बीच सुलह कराना,धोका धड़ी और रिश्तों के तोड़ने से बचना और हराम खान पान से बचना जैसे सिगरेट,नशे वाली वस्तुयें सेवन करना,औरतों का बेपरदा निकलना और मर्दों संग खलत मलत होना, जब यह सब चीज़ें फैलेंगी तो यह आम मुसीबतों और बलाओं का महत्वपूर्ण कारण बनेंगी।

आप यह याद रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा बनाए रखे- अल्लाह ने आपको बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا.(الأحزاب56)

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके(फरिश्ते) देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो."

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं.

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

माजिद बिन सुलेमान अर्रस्सी

23 जुमादल आखिर 1442

जुबेल – सऊदी अरब

00966505906761

अनुवाद : अब्दुल करीम अब्दुस्लाम मदनी।

ghiras4translation@gmail.com

@Ghiras_4T